पुष्पा दुबे

दो देशों के बीच घूमती हुई कहानियाँ

सुधा ओम ढींगरा की कहानियाँ एक साथ दो देशों, दो संस्कृतियों, दो परिवेशों में घटित होती हैं। इन कहानियों में पाठक को एक साथ दो अलग-अलग देशों के बीच आवाजाही का अवसर मिलता है।

सच कुछ और था... उनका नया कहानी-संग्रह है। ख़ूबसूरत और रहस्यमय आवरण में लिपटी किताब, जिसमें ग्यारह कहानियों को संकलित किया गया है। पहली कहानी 'अनुगूँज' है। यह कहानी सच और झूठ के बीच निर्णय लेने में फँसी हुई कथा नायिका मनप्रीत के अंतर्द्वंद्व की कहानी है। जब एक तरफ़ परिवार हो और दूसरी तरफ़ सच हो तो निर्णय लेने में ऊहापोह की स्थिति आना स्वाभाविक बात है। उस मानसिक स्थिति को शब्दों के माध्यम से बख़ूबी उकेरा गया है, जिसमें मनप्रीत जी रही है। कहानी जब समाप्त होती है तो पाठक जैसे राहत की साँस लेता है, क्योंकि वह मनप्रीत से वही चाहता है, जो मनप्रीत अंत में करती है। दूसरी कहानी 'उसकी ख़ुशबू' एक रहस्य कथा है। कहानी अमेरिका में घटित तो होती है, लेकिन इस प्रकार कि यदि उसमें स्थान और पात्रों को भारत का कर दिया जाए तो वह कहानी भारत की हो जाएगी। एक सामान्य विषय को उठाकर रोचक कहानी रच दी गई है। कहानी समाप्त होती है तो इत्र की तीखी ख़ुशबू पाठक को भी महसूस होती है। तीसरी कहानी 'सच कुछ और था...' सबसे लंबी कहानी है। यह कहानी दाम्पत्य जीवन के उजले पानी के अंदर जमी तलछट पर रोशनी डालती है। कहानी भारत और अमेरिका के बीच की ज़मीन पर दोनों देशों के साझा समय में घटित होती है। एक हत्या को केंद्र में रखकर लेखिका ने कहानी का ताना-बाना बहुत कसावट के साथ बुना है। हत्या की पड़ताल करती हुई कहानी धीरे-धीरे दाम्पत्य के अंदरखानों में जमी हुई धूल को उजागर करती है।

'पासवर्ड' भी घटित तो अमेरिका में होती है, लेकिन सब कुछ ऐसा है जो किसी भी देश का हो सकता है। ठगी को लेखिका ने अपना विषय बनाया है। इस प्रकार की घटनाएँ दोनों तरफ़ से घटती हैं, मतलब एन.आर.आई. द्वारा धोखाधड़ी और एन.आर.आई. के साथ धोखाधड़ी। तकनीकी दुनिया के सबसे ज़रूरी औज़ार पासवर्ड को केंद्र में रखकर यह कहानी लिखी गई है। कहानी तन्वी के बहाने अपने समय के एक काले सच को उजागर करती है। 'तलाश जारी है' कहानी बातचीत के माध्यम से जैसे-जैसे बढ़ती है, वैसे-वैसे दो भिन्न संस्कृतियों की पड़ताल करते हुए चलती है। दो पात्रों के बीच चल रहे संवाद और तीसरे पात्र

आलोचनात्मक आलेख प्रकाशित। संपर्क: प्रभारी प्राचार्य एवं विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, शासकीय चंद्रशेखर आज़ाद महाविद्यालय, सीहोर-466001 (म. प्र.)

के दिमाग़ में उन संवादों को लेकर चल रहा द्वंद्व, बहुत अच्छे से सारी बातों को समझा देता है। यह वास्तव में भारत और अमेरिका के बीच के फ़र्क़ को तलाशने की कहानी है। कहानी बहुत कड़वे शब्दों में बताती है कि केवल देश बदल लेने से सब कुछ नहीं बदल जाता है। 'विकल्प' एक पुराने विषय को नई दृष्टि से देखने की कोशिश करती है। नैतिकता, शुचिता- जैसे कई शब्दों को नए सिरे से परिभाषित करती है। समय के साथ जो परिवर्तन आ रहे हैं, उनके परिप्रेक्ष्य में यह कहानी बात करती है, मगर इतिहास से लेकर पुराण तक उनके सूत्र तलाशती है। संपदा के ऊहापोह तथा उसकी जेठानी का सहजता से सच पर चर्चा करने का भाव, इन दोनों के बीच जो संघर्ष है, उसका चित्रण लेखिका ने बहुत अच्छी तरह किया है। कहानी का अंत आने तक संपदा के स्थान पर कथा नायिका उसकी जेठानी नीरा हो जाती है। यह 'ट्रांसफार्मेशन' बहुत कुशलता के साथ चित्रित किया गया है।

'विष बीज' आज के समय की कहानी है। कहानी में जो कुछ हुआ, जैसे हुआ, उसके विवरण में जाने के बजाए पीछे लौटती है और सबसे महत्त्वपूर्ण प्रश्न का उत्तर तलाशती है कि क्यों हुआ। एक बलात्कारी की मनोदशा को बहुत संतुलित ढंग से वर्णित किया गया है। 'काश ऐसा होता' बहुत छोटी कहानी है। उम्र के उत्तरार्द्ध में आनेवाले अकेलेपन की कहानी। उस अकेलेपन की त्रासदी वही जान पाता है जो उसे भोग रहा होता है। यह कहानी उस त्रासदी का एक सुखद समाधान तलाश कर समाप्त तो होती है, लेकिन अपने पीछे एक प्रश्न छोड़ जाती है कि जो कुछ और जैसा यहाँ अमेरिका में हुआ, वैसा ही कुछ यदि भारत में भी काश होता, हो सकता! वृद्धजनों का एकाकीपन सारी दुनिया में एक-सा ही है। देश बदलने से उसमें कोई बहुत बड़ा परिवर्तन नहीं आता है। 'क्यों ब्याही परदेश' एक छोटी कहानी है तथा पत्र की शैली में लिखी गई है। सात समंदर पार जा चुकी बेटी का अपनी माँ को लिखा गया यह पत्र संवेदना के धरातल पर चलता है। 'और आँसू टपकते रहे' भी भावनात्मक कहानी है। 'बेघर सच' शिल्प के स्तर पर बहुत सुगठित कहानी है। रंजना के सवालों की चुभन को पाठक पूरी कहानी में महसूस करता है। स्त्री का पूरा जीवन इस एक ही सवाल का उत्तर तलाशते हुए बीतता है कि उसका घर कौन-सा है, कोई है भी अथवा नहीं। लेखिका ने उस प्रश्न को एक बार फिर से रंजना के माध्यम से उठाया भी है और उसका समाधान तलाशने की कोशिश भी की है।

संग्रह की कहानियाँ अपने-अपने तरीक़े से कुछ जटिल प्रश्नों से मुठभेड़ करती हैं और पाठक को अपने साथ बहुत ख़ामोशी से उस मुठभेड़ में शामिल कर लेती हैं। हर कहानी अपने साथ किसी-न-किसी सरोकार को लेकर आती है और उसे चर्चा के केंद्र में रखती है। दो देशों के बीच घूमती वे कहानियाँ पाठकों को सतरंगे संसार की यात्रा पर ले जाती हैं।

सच कुछ और था...(कहानी-संग्रह) सुधा ओम ढींगरा; शिवना प्रकाशन, सम्राट कॉम्प्लेक्स बेसमेंट, बस स्टैंड के सामने, सीहोर - 466001 (म.प्र.); 2017; 250 ₹